गुरु की बिल्ली

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा सुनाई गई एक कहानी

एक बार की बात है, नेपाल के काठमाण्डू शहर में एक आश्रम था जहाँ एक गुरु अपने कई शिष्यों के साथ रहते थे। इस आश्रम में एक बिल्ली भी रहती थी। वह बहुत ही प्यारी बिल्ली थी, बड़ी मिलनसार और दूसरों को खुश करने को आतुर। सभी आश्रमवासी उस बिल्ली को बढ़िया भोजन देते थे और उससे बहुत स्नेह भी करते थे।

बस एक मुसीबत थी : वह बिल्ली भी आश्रम के दैनिक कार्यक्रम में भाग लेना चाहती थी। उस बिल्ली के कार्यक्रम में भाग लेने से गुरु और शिष्यों के नामसंकीर्तन एवं ध्यान में विघ्न पड़ने लगा। ऐसा क्यों? जब गुरु और शिष्य नामसंकीर्तन कर रहे होते तो वह बिल्ली चिल्लाने लगती। जब वे ध्यान कर रहे होते तो वह बिल्ली ज़ोर-ज़ोर-से ख़र्राटे लेने लगती।

इसलिए, गुरु ने कहा कि प्रत्येक दिन, नामसंकीर्तन और ध्यान के दौरान बिल्ली को दूसरे कमरे में एक खम्भे से बाँध दिया जाए। शिष्यों ने अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया और दैनिक कार्यक्रम का अनुशासन फिर से बरक़रार हो गया। अब बिल्ली कोई बाधा नहीं डालती थी और नामसंकीर्तन एवं ध्यान पर सबका केन्द्रण एक बार फिर मज़बूत हो गया था।

कुछ वर्ष बीत गए, और एक शुभ दिन गुरु ने शान्तिपूर्वक अपनी देह का त्याग कर दिया। नामसंकीर्तन और ध्यान के दौरान शिष्यों ने बिल्ली को खम्भे से बाँधना जारी रखा।

एक दिन वह प्यारी बिल्ली चल बसी। शिष्यों ने एक मीटिंग बुलाई और उसमें चर्चा की कि गुरु की सिखावनियों को संरक्षित रखना कितना आवश्यक है। दृढ़ निश्चय के साथ वे बाज़ार गए तथा एक और बिल्ली ख़रीद लाए जिससे नामसंकीर्तन एवं ध्यान के समय वे बिल्ली को खम्भे से बाँध सकें और इस प्रकार गुरु की सिखावनियों का निष्ठापूर्वक सम्मान कर सकें।

संकल्पना और डिज़ाइन : गुरुमाई चिद्विलासानन्द
डिज़ाइन प्रारूप : लिओ लेगोर्रेट्टा
चित्र : द्योनिस्यो सबाय्योस

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस विषय-वस्तु के किसी भी अंश की प्रतिलिपि न बनाएँ।